SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

तबला अभ्यास में कायदा का महत्व

MILAN DODIYA[1], DR. KEDAR MUKADAM[2]

1Research Scholar, Department of Tabla, Maharaja Sayajirao University of Baroda
2 Assistant Professor, Department of Tabla, Maharaja Sayajirao University of Baroda

सार

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधार्थी द्वारा आज के हमारे सबसे लोकप्रिय अवनद्य वाद्य तबला का महत्वपूर्ण वादन प्रकार ऐसे 'कायदा' विषय पर प्रकाश डालने का विनम्र प्रयास किया गया है। तबला स्वतंत्र वादन मे कायदा का महत्व , कायदा के महत्व के बारे में अलग-अलग विद्वानों के विचार, अलग-अलग घरानों के कायदों की विशेषताएं तथा साथ-संगत में कायदा का महत्व इन विषयों के पहलुओं का शोधार्थी द्वारा संक्षिप्त मे विवरण इस शोधपत्र मे दर्शाया गया है।

बीज शब्द : *तबला, कायदा, अध्ययन, महत्वता, विशेषता*

प्रस्तावना

तबलवादन में विविध वादन प्रकारों का अपना अपना महत्व होता ही है, क्यूंकी ये सब वादन प्रकार स्वतंत्र रूप से श्रवणीय होते है; किन्तु कलाकार जब किसी कला को प्रस्तुत करता है। तब सौन्दर्य का निर्माण, नवनिर्माण, विस्तारक्रिया, इन सब का प्रयोग जब वह अपनी कला में कर पाता है, तब ऐसा वादन यकीनन कला का प्रस्तुतिकरण माना जाता है। तबलावादन में एसा कलापूर्ण प्रस्तुतिकरण करने का सबसे नवनिर्मिती से भरा हुआ आशयगर्भ वादन प्रकार कोई है, तो वह है, 'कायदा'। कला की निर्मिति किस प्रकार हो, इसके बारेमें कुछ संकेत होते है, नियम होते है, मर्यादाए होती है, प्रतिबंध होते है तथा अपेक्षाएं होती है। इन सबको ध्यान में रखकर कलाकार को कला की निर्मिति करनी पड़ती है । कला निर्मिति की प्रक्रिया के दरमियान इन सब संकेत और नियमों का भंग न करते हुए कला की निर्मिति करना हर कलाकार के लिए एक चुनौती होती है। उस चुनौती का पूर्णतः स्वीकार करके, जब कलाकार कला का प्रस्तुतिकरण करता है, तब उसे अत्युत्तम दर्जे का आनंद और संतोष प्राप्त होता है।यह विचार सभी कलाओं पर लागू होता है। लेकिन तबले में कायदा तथा उसकी विस्तारक्रिया, इस कला प्रक्रिया पर यह विचार सौ प्रतिशत लागू होता है। इन नियमों के बंधन में रहकर प्रतिभावान वादक जब उपज अंग से कायदे की विस्तारक्रिया करते हुए, नये नये रास्ते ढूंढकर खूबसूरती से नये पलटों की निर्मिति करता है, तब उन्हे उच्चकोटी का आनंद प्राप्त होता है। दिल्ली तथा अजराडा घरानों के जयेष्ठ तबलावादक इस प्रकार का आनंद हमेशा लेते रहते थे और रसिकों को देते थे।

कायदा का महत्व

तबला वादन के उदेश्य-सिद्धि में 'कायदा' की महत्वपूर्ण भूमिका -तबला सीखने और सिखाने के महत्वपूर्ण उदेश्य...

१. वाद्य के ऊपर नियंत्रण यानि उसका तंत्र।

२. दूसरा जो हेतु है वो है तबले से जो पूरे नाद उत्पन्न होते है वो नाद तबला वादक के हाथों में अंकित होना, यानि टोनल कॉलेटी अच्छी होनी चाहिए।

३. तीसरा है लय, तबला लय वाद्य हैं। तबला वादक की लय अच्छी होनी चाहिए और सहजता से लयकारियाँ भी आनी चाहिए।

४. चौथा है समजदारी, जो भी तबला की बंदिश हो उसको समज कर बजाना, सिर्फ सिखाया, लिख लिया, बजाया ऐसा नहीं। उसमे क्या सौन्दर्य है, उसकी निकास कैसी है, उसका नाद कैसे है, जिसने उसको रचा है उनका क्या विचार है। तो ये समजदारी भी शिक्षा का उदेश्य होता है।

५. तबला ये शास्त्रीय वाद्य है तो विस्तार क्रिया और उपज बहुत महत्व पूर्ण है। अलग-अलग दिशा से विस्तार और अलग-अलग मार्गों से विस्तार करने की क्षमता विकसित करना और आगे चलकर उसमे उपज भी करना ये तबला वादन का महत्व पूर्ण अंग है।

६. तबला वादक बहुमुखी, उदारमत वादी तथा पूरा सांगीतिक व्यक्तित्व होना चाहिए।

ये सभी महत्व पूर्ण अंग और तबला बजाने के उदेश्य जो कोई एक प्रबंध सिद्ध करता है तो वह है कायदा।

तबला सिखाने के उदेश्य, कायदा का महत्व और कायदे के माध्यम से क्या सीखा जा सकता है।

- वाद्य पर नियंत्रण
- तंत्र (नादों पर प्रभुत्व/तकनीकि बोध)
- गति मानता
- लय की पकड़ तथा लयकारीयां
- समजदारी का विकास (सौन्दर्य,निकास,नाद,रचनाकार के विचार)
- अलग अलग दिशा से विस्तार(विस्तारक्रिया)
- नैसर्गिक अच्छाइयाँ को पहचानना, उनको चमकाना तथा कमियों को सुधारना
- अभ्यास क्रिया
- घराने का ज्ञान भाषा का ज्ञान-
- खाली-भरी
- साथसंगत का ज्ञान-
- तिहाई और गणित
- हाथ की तैयारी
- बहुमुखी तबला वादक तथा पूरा सांगीतिक व्यक्तित्व तैयार करना

उपरोक्त ये सारी संकल्पनाएं जिस माध्यम से सिद्ध होती है वो है "कायदा"। ये सब तत्व (अंग) साधने कायदा कैसे सहाय करता है इसे बारीकी से समजते है।

- **तंत्र(तकनीकि बोध)**: तंत्र का अभ्यास यानि हाथ बनाना। पहले तंत्र का हेतु क्या है वो समजना चाहिए। जैसे की आपको जो भी वर्ण का वजन आपको प्रबंध(बंदिश) के अनुसार चाहिए वो निकालना आना चाहिए। हाथ का रखाव इस तरह से होना चाहिए की हमारे हाथों में कोई दोष हो। तंत्र हाथों में सहजता लाने के लिए होता है। कायदा के अलग-अलग प्रकार होतें है, अलग-अलग बोल के कायदें, अलग-अलग निकास के तथा अलग-अलग लय-लयकरियों के कायदे होतें है तो ये हमे उपयोगी साबित होते। और पूछा जाए की तंत्र सीखने में सिर्फ कायदा ही क्यों और कुछ क्यू नहीं तो इसका जवाब है 'एक बात यह की हम जब अपनी प्रस्तुति में बजाएंगे तो कोई रचना ही बजायेंगे, मात्र **तिट** शब्द नहीं बजाएंगे, तो तिट के कोई कोई **स्वर** तो आएगा ही **धा** आएगा ही तो सिर्फ **धातिट** इतना ही क्यूँ करे, क्यूंकी रियाज़ करते समय उदाहरण के तौर तिट के साथ लयबद्ध स्वरबद्ध पंक्ति रहती है तो बोल सीखने में ज्यादा आनंद आता है इसका एक सिम्पल उदाहरण देते हुए प्रवीण जी समजाते है की "हमे बचपन में जो गणित के टॅबल(तालिका) पढे वो एक सूर में तथा एक निश्चित लय में हमको याद करवाया जाता था,जिससे अपने आप वो याद रह जाता था, इस लिए कोई भी शब्द (**तिट,तिरकिट,धिनगिन,धिरधिर**) का रियाज़ स्वरमय अंत्यपद रहेगा तो वो जल्दी याद भी रहेगा, याद भी रहेगा और इससे क्या एक छंद की आकृति तैयार होगी जिससे आनंद भी आएगा। दूसरा यह की कुछ कायदों एक ही शब्द की निकास अलग-अलग होती है की **पहला तिट सीधा, दूसरा तिट उलटा** लगाना होता है,कई धात्रक के कायदों में **धात्रक आगे, दूसरा धात्रक थोड़ा स्याही के पीछे के तरफ** लगता है जिससे वो शब्द पूरे हाथ में बैठ जाए। इसलिए **कायदा** 'तंत्र' को साधने में उपयोगी है।

- **लय-लयकारियाँ :** भारतीय संगीत एक खास अंग है लय। भारतीय संगीत कभी एक लय में नहीं आगे बढ़ता, जैसे की ध्रुपद में होता है की जो लय से चालू किया उसी लय में समाप्त करना। उत्तर भारतीय संगीत में विलंबित से मध्य , मध्य से द्रुत, द्रुत से अति द्रुत लय तक भी हमारा संगीत रहता है। अभी कायदा को ध्यान में रखे तो सभी लय के कायदें उपलब्ध यानि अगर टेम्पो के हिसाब से देखे तो ४० से ९०-९५ तक सभी लय के कायदें उपलब्ध है तो क्या है हमें सभी लय में ये विश्वास आ जाता है की हा इस लय में बजा सकेंगे। एक बात ध्यान देने योग्य है की **'जैसे हर लय के कायदें होते है, उसी तरह हर कायदों की अपनी लय होती है'।** फिर अलग-अलग जातियों का कायदें होते है, जिससे सभी जातियों का अभ्यास भी अपने आप हो जाएगा। तथा कायदें की प्रस्तुति सामान्यतः एकगुन, डेढ़गुन और दुगुन इस क्रम में होती है । यह सारी मुद्दों का जब क्रियात्मक ढंग से अमल मे लाते है तब लय-लयकरियों का भी अभ्यास कायदों के द्वारा हो जाता है।

  कभी कभी कायदे खुद ही लयकारी युक्त होतें है जैसे की पंजाब के कायदे होते है तो उसमे इनबिलट लय का अभ्यास दिखाया जाता है। जैसे

  घीऽनाऽ ऽधातिधा गेनाधागे धीनगधे

  ऽनाऽगे नाधातिधा गेनाधागे तिनाकिना

  केऽन्नाऽ ऽतातिता केनाताके तिनकधे

  ऽनाऽगे नाधातिधा गेनाधागे धिनागिना

- **नादों पर प्रभुत्व(Tonal quality) :** तबला वाद्य में मुख्य बात है वो है नाद और लय ये दो चीज एसी है जो सिखाई नई जाती ये संस्कारित की जाती है। तबला एक ताल वाद्य है जिसमें लगभग सभी ताल वाद्यों के गुण विद्यमान होते है। अर्थात तबला एक मात्र एसा ताल वाद्य है जो समस्त ताल वाद्यों की विशेषता अपने में समेटे हुए है। तबले में नाद वैचित्रता भी इतनी है की श्रोतागण चकित हो जाते है। तथा सभी ताल वाद्यों का असर(बाज) हम दिखा सकते है

तबले में चार नाद होते है।

१. खुला नाद जिसे स्वर कहते है।

२. बंद नाद जीसे व्यंजन कहते है।

३. खरज नाद जो बायें से निकलता है।

४. तार ध्वनि जो चाँटी से निकलती है।

इन चार प्रमुख नादों के पृथक-पृथक अक्षर व वर्ण होते है। इन वर्णों से शब्द व शब्दों से वाक्य विधान बनते है है। यदि इन वर्णों की अलग-अलग साधना की जाए तो एक कुशल तबला वादक में भाषा का संस्कार विकसित होता है अर्थात इन सभी नादों का अभ्यास संभवतः कायदे के माध्यम से भली-भाँति किया जा सकता है। कायदे में स्वर-व्यंजन का अच्छा समन्वय देखने को मिलता है।

- **भाषा का अभ्यास :** कायदा अपने आप में पूरा विधान है, और इस विधान का ही विस्तार होता है। कायदों में जो **तिना-धिना, तिनाकिना-धिनागिना, तिनतिनाकिना-धिनधिनागिना** होते है जिससे **यमक(तुकांत) कहते है, तथा रदीफ़-काफिया** भी कहते है ये नियमित रूप से होता है। तथा भाषा के जो तिन अलंकार भी कायदों में होते है। इससे क्या होता है की हमें तमीज़ की पहचान होती अभी उदाहरण के तौर पे **धागे तिना किना** अंत्यपद कायदों में आता है तो कायदे में अगर **तिट तिना किना** बजाएंगे तो ये बदतमीजी होगी। तो इन मुद्दों से अनुशासन में रहने की तथा तबले के सिद्धांतवाद की मालूमात होगी।

- **खाली-भरी के संस्कार :** खाली-भरी एक एस तत्व जिससे तबला और बाकी के अन्य ताल वाद्य अलग पडते है। ये तत्व मूलतः ताल और ठेकों में होता है, और इन्हीं मे से कायदों आया है, और जो खाली-भरी का संस्कार हमें मिलता है वो कायदों के माध्यम से ही मिलता है। तबला वादक अगर दो घंटे भी स्वतंत्र वादन की प्रस्तुति करे तो श्रोता इसका आनंद लेते है उसका मूल कारण है खाली-भरी। खाली-भरी से रचना आवर्तनात्मक बन जाती है(उदा. घर से बाहर जाओ और वापिस घर आओ) तो ये जो आमद होती है वो खाली-भरी तत्व से आती है जिसको आवन-जावन भी कहते है। और ये तत्व सबसे ज्यादा कायदों में देखने को मिलता है। कायदों में खाली-भरी सिर्फ एक नियम नहीं पर एक सौन्दर्य-तत्व भी है, कायदों के बहुत सारे विस्तार हम इसे देखते है। तो इस तरह कायदों के द्वारा खाली-भरी के भी संस्कार हम को मिलते है।
- **विस्तारक्रिया :** हमारे संगीत में 'Theme and Improvision' बहुत महत्व है। जैसे राग में पाँच, छह या सात सुर होते है तथा आगे उस राग में एक एक सूर की बढ़त की जाती है, वैसे ही कायदों में एक छोटा विधान होता और उसकी सुनियोजित बढ़त की जाती है। जिससे कोई भी विस्तारक्षम बंदिश का विस्तार कैसे किया जाए ये हमे आता है। ताल के दश-प्राण में गृह (अतीत,अनागत) ये तत्व लेकर कायदों की बढ़त होती है जिससे एक नई दिशा भी मिलती है। कायदा की शिक्षा से हमे अलग-अलग तरीकों विस्तार करना, अलग-अलग दिशा से विस्तार करना इसका अभ्यास होता है।

  कायदे का विस्तार चार प्रकार से होता है-

  १. गुरु मुख से प्राप्त विस्तार

  २. भाषा पर आधारित विस्तार

  ३. गणित के हिसाब से विस्तार

  ४. शास्त्र के हिसाब से विस्तार

  अर्थात कायदे का क्षेत्र इतना विस्तृत है की जितना चाहें उतना विस्तार किया जा सकता है। तालिम प्राप्त करते समय विद्यार्थीओं को कायदा विस्तार की प्रक्रिया से अवगत कराया जाता है और जब वह कलाकार बनने के मार्ग पर चलना आरंभ करता है तब वह स्वयं भाषा पर आधारित तथा गणित और शास्त्र को आधार बनाकर नवीन पलटों की रचना करने योग्य हो जाता है। यह विस्तृत ज्ञान कायदे की शिक्षा ग्रहण करने से ही प्राप्त होता है।

- **तिहाई और गणित :** कायदों के जो शब्द होते है वो अलग-अलग मात्राओं में बंधे होते है। जिसका स्वरूप लेकर हम विस्तार भी कर सकते है और तिहाई भी बना सकते है। हाँ, हम जब एक कायदे के अलग-अलग मार्ग से विस्तार करते है तो जब हम दूसरे मार्ग में जाते तो उस बोल की तिहाई लेके निरन्तरता में दूसरे मार्ग(दूसरे बोल)पे जाते है जिससे तिहाई और गणित को भी सौन्दर्य के साथ कैसे कर सकते है वो शिक्षा होती है।
- **अभ्यास क्रिया :** कायदा रचना के निर्माण का मुख्य उदेश्य है- हाथों का सही ढंग से संचालन एवं अभ्यास का उचित तरीका। कायदे के अभ्यास से ही, दायें-बाएं के वादन पर वादक का प्रभुत्व, लय की स्थिरता, कल्पनाशक्ति, ताल स्वरूप एवं उसके नियम का ज्ञान सहजता से होता है। इसलिए तबले के मुख्य बोलों का अभ्यास भली-भाँति करता है। बोलों का उचित अभ्यास कायदे के माध्यम से ही संभव है। कायदे के अधिकाधिक अभ्यास से ही तबला वादन की अन्य बोल-बंदिशों का वादन सुलभता से किया जा सकता है।
- **बौद्धिक क्षमता में वृद्धि :** कायदा मानवी हाथ की चलन क्षमता और क्रियात्मक वादन कौशल को बढ़ाने वाला सबसे महत्वपूर्ण विस्तारशील वादनप्रकार है। कायदे के रियाज़, चिंतन तथा उसकी विस्तारक्रिया के अभ्यास से विद्यार्थीओं की बौद्धिक क्षमता में

वृद्धि होती है। विद्यार्थी को कलाकार बनने-बनाने में कायदा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसीलिए कायदे के विषय में कहा गया है- "Kayda is the hero of all tabla solo performance even tabla learning".

- **अनुशासन बद्धता :** कायदे में अनुशासन बद्धता का गुण विद्यमान होता है। अनुशासन में बँधा हुआ। कायदा वादन प्रस्तुतिकरण करते समय कुछ विशेष नियमों का आवश्यक रूप से ध्यान रखा जाता है जैसे- कायदा तालाकार हो, ताल की ताली-खाली के अनुरूप हो एवं जिन बोलों से कायदा निर्मित है वे बोल उचित क्रमानुसार होने चाहिए। इन समस्त नियमों का पालन करते हुए ही कायदा का वादन अनुशासन पूर्ण होता है। विद्यार्थीओं को अनुशासन में रहकर ही कायदा प्रस्तुत करना आवश्यक होता है। इसी के माध्यम से विद्यार्थीओं में तबला वादन हेतु अनुशासन का गुण उत्पन्न होता है।

- **उपज अंग** – तबला एक ऐसा वाद्य है जो संगत हेतु सर्वाधिक प्रचलन है और स्वतंत्र तबला वादन तथा संगत दोनों मे ही कायदे का वादन प्रमुखता से किया जाता है। गायन, वादन तथा नृत्य के साथ संगत करते समय कलाकार की कल्पनाशक्ति अर्थात उसकी उपज या बढ़त करने की क्षमता उच्च स्तरीय होनी चाहिए। यूं तो उपज पेशकार में भी की जाती है लेकिन उसके जो बीज है वह कायदा में विद्यमान है। पेशकार की बढ़त वही कलाकार कर सकता है जिसे कायदे की बढ़त करने का उचित अभ्यास हो क्यूंकी अनुशासन कायदे से ही मिलता है और यह कायदे के विस्तार का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। पेशकार अच्छा तबही बजेगा जब कायदे के सभी संस्कार हमें मिलेंगे और सभी विस्तारशील बंदिशों का आधार कायदा ही है।
  कायदा की नियमबद्धता अगर हम समज जाते है की हाथ अच्छी तरह रख रहे है, विस्तार कैसे करेंगे, तिहाई कैसे लगाए, निकास की तमीज़, भाषा की तमीज़ क्या है, वो समज लेते है तो फिर "**जो कायदा अच्छी तरह समज के बजा सकता है, वो ही तबला वादक पेशकार अच्छी तरह बजा सकता है।** वरना जो पेशकार बजाते है वो बिखर हुआ पेशकार बजाएंगे। क्यूंकी पेशकार में समस्या क्या है, की पेशकार में हमें सब बातों की छूट है, आप जिस चाहे लय में बजा सकते हो, जो चाहे बोलों का चयन कर सकते हो, जाती बदल सकते हो, और जब इतनी सारी छूट मिली है तो कई बार एसा होता है की वादक भटक जाते है की क्या करे! तब पेशकार एक विस्तार की अच्छी बढ़त होने बाद दूसरे विस्तार में कैसे जाए इसका मर्म हमें तब ही आएगा जब हमने **कायदा का विस्तार अच्छी तरह सिखा हो**।"

- **सृजनशीलता का विकास :** तबलावादन हेतु विद्यार्थी का सृजनशील होना अत्यंत आवश्यक है। विद्यार्थीओं में यह गुण कायदे के माध्यम से सुलभता से उत्पन्न किया जाता है। प्रारंभ से गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत शिष्यों को जब कायदे की शिक्षा दि जाती है तब कायदे का रियाज़ लंबी अवधि तक कराया जाता है अर्थात प्रतिदिन घंटों-घंटों तक एक ही कायदे का रियाज़ करने से कायदे का स्वरूप, उसके खंड व बोलों का शिष्य के मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाववव पड़ता है जिससे सृजनशीलता का गुण विकसित होता है।

ये सारे तत्व सिर्फ एक बंदिश **कायदा** मे पाये जाते। इसलिए कायदा तबला का सबसे महत्व पूर्ण प्रबंध है।

कायदा के महत्व के बारे में विद्वानों के मत:

श्री प्रवीण करकरे : में पिछले तीस वर्षों से तबला सीखा रहा हूँ, अलग-अलग विद्यापीठों में भी सिखाया, कुछ म्यूजिक शालाओं में भी सिखाया, अच्छी अच्छी संस्थाओं में सिखाया, क्लासरूम टीचिंग हो चाहे कार्यशाला हो, कई गुरुजनों को सीखाते हुए देखा है, तो एक बात देखि जाती है की ज्यादातर तबला की शिक्षा कायदों की द्वारा दी जाती है। जो हम स्वतंत्र वादन की प्रस्तुति देखते उसमे आधा समय कायदा और उसका छोटा भाई रेला का प्रयोग होता है। तब भी हम किसीसे पूछें तो 'कायदा क्यों क्या सीखाते है तो एक ही जवाब मिलता है कायदा हाथ तैयार करने के लिए होता है। तो अगर किसीसे पूछा जाए के क्या कायदा सिर्फ हाथ तैयार करने के लिए ही होता है ? तो हा ये एक महत्व पूर्ण अंग है कायदे का ये सिर्फ एक अंग है।

डॉ. विजय सिद्ध : 'कायदा' तबले की अत्यंत महत्वपूर्ण रचना है। प्रत्येक कायदे की बंदिश व निकास पृथक होता है और उसमे निर्दिष्ट नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है की कायदा की प्रक्रिया और उसके 'पलटे' खोलना। प्रत्येक कायदे के जब पल्टे खोले जाते है तो उनमें बोल एवं बोल समूह का प्रयोग होता है जिनका कायदे की प्रमुख रचना में हुआ है।

पं. विजयशंकर मिश्र : 'कायदे का महत्व जीवन के हर क्षेत्र में होता है और तबला भी इससे अछूता, अस्पर्शित नहीं है। कायदे की शिक्षा विद्यार्थीओं को उनके हाथ के रख-रखाव और बोलों के निकास के लिए दि जाती है। इसलिए तबला के विद्यार्थीओं की संगीत की शिक्षा योग्य गुरु द्वारा गुरु द्वारा प्रायः कायदे से ही प्रारंभ की जाती है।'

Robbert S. Gottlieb: 'This is the most important improvisational form. The Qaida has the same phrase structure as the peshkar, but at has greater potential for elaboration because its content is more varied.'

निष्कर्ष

तबला अभ्यास तथा अध्ययन करने में तंत्र, बोल निकास, उपज अंग, सृजनशीलता का विकास, बौद्धिक विकास, लय-लयकारी-गणित-तिहाई इत्यादि सभी महत्व पूर्ण तत्वों को तबला के मात्र एक प्रबंध "कायदा" से साध सकते है। इसलिए "कायदा" तबला की महत्व पूर्ण बंदिश है। और इसे तबला सीखने हेतु प्राथमिकता दि जाती है और सही भी जिससे विद्यार्थी का तबला के सौन्दर्य पक्ष की ओर सर्वांगीण विकास होता है।

संदर्भ

१. माईणकर सुधीर/तबला वादन में निहित सौन्दर्य/सरस्वती पब्लिकेशन/मुंबई
२. वैशाली/२०२३/सुप्रसिद्ध तबला वादक स्वर्गीय उस्ताद अहमद जान थिरकवा के वादन में प्रयुक्त कायदे-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन/संगीत विभाग, कला संकाय दयालबाग एज्युकेशनल इंस्टिट्यूट,(डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग,आगरा/शोधगंगा(http://hdl.handle.net/10603/582283)
३. Deparment of Tabla, MSU, Baroda/13 march 2023/32 Online Lecture – Prof. Sudhirkumar Saxena JanmashatabdiMahotsav[Video]/youtube(http://www.youtube.com/live/fkmoBI04Gc8?si=qGRh8_UMxn8AxDN8)
४. विश्वकर्मा चंदन/दिल्ली घराने के तबला वादन में निहित सौन्दर्य तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन/बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी/शोधगंगा(http://hdl.handle.net/10603/275405)